P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-V* January-2016

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी प्रणीत 'श्रीगान्धिगौरवम्' महाकाव्यः एक अनुशीलन

श्यामलाल
प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
डॉ. बी. आर. गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

बलवन्त सिंह चौहान
प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
डॉ. बी. आर. गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

सारांश

संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान्, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, आयुर्वेद, ज्योतिष, धर्म तथा व्याकरण में अग्रणी रहे श्री शिवगोविन्द त्रिपाठी का जन्म उत्तरप्रदेश के नैमिषारण्य तीर्थ के समीप हरदोई जिले के सण्डीला नगर में चैत्र शुक्ल अष्टमी, बुधवार को संवत् 1955 में श्री शिवनारायण त्रिपाठी के प्रांगण में हुआ। उत्तरप्रदेश शासन शिक्षा विभाग द्वारा राज्य साहित्यिक पुरस्कृत कविवर की कृति 'श्रीगान्धिगौरवम्' आठ सर्गों तथा 680 पद्यों में निबद्ध है जिसमें स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के महान् व्यक्तित्व को इस लघुकाय महाकाव्य में प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : बैरिस्टर, खादीवस्त्र, शाश्वत–मूल्य, स्वावलम्बी, अहिंसा, साबरमती, ट्रांसवाल, शान्ति–निकेतन, सत्याग्रह, दुःखवारिधि, राष्ट्रीय चेतना, स्वदेश–प्रेम, स्वार्थत्याग।

प्रस्तावना

राष्ट्रपिता के जीवन–संघर्ष एवं जीवन–दर्शन पर आधारित 'श्रीगान्धिगौरवम्' महाकाव्य का प्रारम्भ नमस्कारात्मक व वस्तुनिर्देशात्मक पद्यों से किया गया है। कविवर ने विद्या की आराध्या, देवी सरस्वती की वन्दना और अपने गुरु 'श्रीशम्भुरत्न' को नमस्कार करते हुए अपने महाकाव्य के प्रथम सर्ग म गाँधी के जन्म, विद्याध्ययन, कस्तूरबा से विवाह, शिक्षार्जन के लिए लन्दन प्रस्थान तथा बैरिस्टरी का प्रमाण–पत्र प्राप्त कर भारत की पुनः वापसी आदि वृत्तान्तों को स्थान दिया है। द्वितीय सर्ग में राजकोट आकर वकालत करना, दक्षिण अफ्रीका जाना, नेपाल से भारत वापसी आदि वर्णित है। तृतीय सर्ग में नारायण की प्रेरणा से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, वकालत त्यागकर जन–सेवा करना, कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में सहभागिता, राजकोट मे बैरिस्टरी प्रारम्भ करना आदि है। चतुर्थ सर्ग में पुनः अफ्रीका गमन, जोहान्सबर्ग में वकालत करना, 'इण्डियन ओपीनियन' नामक समाचार–पत्र निकालना, फीनिक्स आश्रम की स्थापना करना, 'जुलू' विद्रोह में सेवा कार्य करना, सत्याग्रह आन्दोलन, कारावास, लन्दन में श्रीगोखले से भेंट आदि वर्णित हैं। पचम सर्ग में अहमदाबाद में सत्याग्रह आश्रम का विधिपूर्वक संचालन, लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन, चम्पारण अभियान, खेड़ा सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन, चम्पारण अभियान, खेड़ा सत्याग्रह सविनय अवज्ञा आन्दोलन, अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन, खादी अभियान, नागपुर अधिवेशन आदि चित्रित हैं। षष्ठ सर्ग में अंग्रेजों की परतन्त्रता से मक्ति पाने हेतु भारतीयों को प्रेरित करना, नमक आन्दोलन, गिरफ्तारी, गाँधी का कारागृह से मुक्त होकर दिल्ली में इर्विन से वार्तालाप करना आदि हैं। सप्तम सर्ग में गोलमेज परिषद् हेतु गाधीजी का लन्दन प्रस्थान, गाँधी जी को यरवदा जेल भेजना, जेल से मुक्त होकर स्वास्थ्य लाभ के लिए पूना प्रस्थान, अछुतोद्धार कार्यक्रम, भारत छोड़ो आन्दोलन, महात्मा गाँधी को 'आगाखाँ' महल में बन्धक बनाकर रखना, स्वराज्य प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास, कस्तूरबा गाँधी का देवलोक गमन आदि वर्णित हैं। अन्तिम अष्टम सर्ग में गाँधीजी का सेवाग्राम से दिल्ली प्रस्थान, गाँधीजी के नेतृत्व के चलते भारत को 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्ति, नोआखली में हुए हिन्दू–मुस्लिम दंगों से दुःखी होकर शान्ति एवं सद्भाव बनाए रखने का सन्देश, साम्प्रदायिक दंगों से विक्षुब्ध होकर गाँधीजी द्वारा अनशन करना, गाँधी की हत्या होने पर भारतवासियों का शोकाकुल होना वर्णित हैं।

उद्देश्य

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी के महाकाव्य 'श्रीगान्धिगौरवम्' की कथावस्तु गाँधीजी द्वारा लिखित आत्मकथा एवं श्रीभगवदाचार्य प्रणीत 'श्रीमहात्मागांधिचरितम्' पर आधारित है। प्रस्तुत कृति का नायक मोहनदास करमचन्द गाधी धीरोदात्त गुणों से संवलित है। सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह

के द्वारा अंग्रेजी शासन से भारत को मुक्त करवाने वाले तपस्या की साक्षात् मूर्ति महात्मा की उपाधि से विभूषित गाँधी के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त घटनाओं को महाकाव्य में स्थान दिया गया है। 'धर्मवीर' रस प्रधान महाकाव्य में करुण, रौद्र, वत्सल, वीभत्स प्रभृति रसों को अंगरसों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। महाकाव्य में गाँधीजी के जीवन चरित को चित्रित करना एवं देशप्रेम की भावना को प्रमुखतया जाग्रत करना कविवर का मुख्य ध्येय रहा है। प्रस्तुत कृति में पर्वत, वन, सूर्योदय, सूर्यास्त, प्रभात, सन्ध्या, तीर्थ–यात्रा प्रभृति वर्णनों को भी स्थान दिया गया है। कविवर को सत्य, अहिंसा और सदाचार द्वारा स्वतन्त्रता रूपी धर्म की प्राप्ति करना अभीष्ट रहा है। प्रत्येक सर्ग की समाप्ति पर अग्रिम सर्ग में होने वाली घटनाओं का संकेत दिया गया है। महाकाव्य पञ्चसन्धियों से समन्वित है। आचार्यों द्वारा उल्लेखित महाकाव्य लक्षणानुसार प्रत्येक सर्ग के अन्त में कविवर के छन्द परिवर्तन भी किया है। चरितप्रधान महाकाव्य में रुचिर प्रसंगों की उपस्थिति में कथानक सहृदयों को अन्त तक बाँधे रखने में पूर्ण सक्षम रहा है। वस्तुतः 'श्रोगान्धिगौरवम्' कृति महाकाव्य की शास्त्रीय कसौटी पर पूर्णरूपेण खरी उतरती है।

वहीं काव्य में माधुर्य, सरसता एवं चारुता के संवर्धन के लिए रस का समावेश आवश्यक है। उत्तरोत्तर रोचकता और आह्लाद की अभिवृत्ति के लिए भी महाकाव्य में रस–सन्निवेश होना ही चाहिए। वही कृति हृदयावर्जक और चित्ताकर्षक होती है, जिसमें सहृदयों को काव्यरस माधुरी का आस्वादन मिल सके। काव्य में रसाभिव्यक्ति को संस्कृत साहित्य के अलंकारिकों ने आत्मभूत तत्त्व माना है। जैसे शरीर आत्मा के बिना निष्प्राण होता है, उसी प्रकार काव्य भी रसाभिव्यक्ति के बिना निष्प्राण होता है। 'श्रीगान्धिगौरवम्' महाकाव्य में अंगीरस के रूप में वीररस की प्रस्तुति अनेकविध स्थलों पर हुई है।

तृतीय सर्ग में अंग्रेजों के साथ बर्बरों के हुए यद्ध में घायलों की शुश्रूषा सेवा में 'धर्मवीररस' की अभिव्यक्ति हुई है।

सुश्रूषणे सेवनकार्यचुञ्चुः, गान्धी च तस्मिन्
निजराजभक्तया।
'इंग्लैण्ड' पालैः सह बर्बराणां, जन्ये स सेवां
विपुलाञ्चकरः।।[1]
एकादशावधिशतं परिगृह्य बन्धून्, सङ्ग्रामसेवनपरः
क्षतकार्यशिक्षाम्।
ज्ञात्वा गृहीतपरिपत्रपदश्च गान्धी, नीत्वा च तानवनगेहमसौ
जुगोप।।[2]
रेड्क्रॉस–शिक्षा–परिशिक्षितैः स्वै, रारोप्य दोल्यां
समराङ्गणात् सः।
श्रीब्रूथतः प्राप्तसहायसंपन्, निनाय मीलान्
शरयुग्मसख्यान्।।[3]

उपर्युक्त पद्यों में युद्ध में घायल हुए व्यक्ति आलम्बन विभाव हैं। घायलों की दुर्दशा एवं तात्कालिक युद्ध का वातावरण उद्दीपन विभाव हैं। महात्मा गाँधी की अपने मित्रों के सहित मिलकर घायलों को रक्षागृह ले जाना, घायलों को डोली पर बिठाकर पच्चीस मील तक चलना आदि अनुभाव हैं। हर्ष, धृति, गर्व आदि सञ्चारी भाव हैं। यहाँ विभाव, अनुभाव तथा सञ्चारी भावों के संयोग से उद्बुद्ध हुआ 'उत्साह' नामक स्थायीभाव परिपक्व होकर 'धर्मवीररस' के रूप में आस्वादित होता हुआ आनन्द प्रदान कर रहा है।

सप्तम सर्ग में कस्तूरबा गाँधी की मृत्यु के प्रसंग में करुण रस की अभिव्यक्ति हुई है।

गाढ़ाक्रान्ता सन्निपातज्वेरण, शोकाक्रान्तान् तत्र गाँधी
जगाद।
हे! हे! बापू! निर्गतष्वक्षरेषु, प्राणांस्तस्या ब्रह्म–शक्तौ
विलीनाः।।[4]
खादीवस्त्रैर्गान्धि–सूत्रैः समृद्धः, आच्छाद्यास्यास्ते च निन्युः
शवं तम्।
खादीं दत्त्वा निर्धनायैव तूर्णं, गन्धैर्लिप्तं देवदासो ददाह।।[5]
गान्धी मन्त्रान् वैदिकान पापठीति, वेदाध्येता स्मार्तरीत्या च
दाहम्।
सम्यक् सर्वं साधयामास तत्र, दिव्यं चक्षुर्भारते वेदरीतिः।।[6]

उपर्युक्त पद्यों में महात्मा गाँधी की मृतभार्या 'कस्तूरबा गाँधी' आलम्बन विभाव है। कस्तुरबा गाँधी का शव, तात्कालिक वातावरण, स्मार्तरीति से किया गया दाह संस्कार आदि उद्दीपन विभाव हैं। पुत्र देवदास का विलाप करना, गाँधीजी द्वारा उनकी आत्मिक शांति के लिए वैदिक मंत्र पढ़ना, निःश्वास, गुण–कथन आदि अनुभाव हैं। विषाद, जड़ता, चिन्ता, स्मृति आदि सञ्चारी भाव हैं। यहाँ उद्दीपन विभावों से विभावित, अनुभावों से परिपोषित तथा व्यभिचारी भावों से भावित होने वाला 'शोक' नामक स्थायीभाव ही 'करुण रस' है।

इसी प्रकार अष्टम सर्ग में 'नौआखली' मे हुए हत्याकाण्ड के प्रसंग में 'वीभत्स' रस की अभिव्यक्ति हुई हैः–

'मन्वैव' साकं परिहृत्य पादुके, ग्रामेषु खेटेषु ददर्श सर्वतः।
गेहानि दग्धानि च वस्तुभिः सह, प्लुष्टाननेकान्
पशुपक्षिसंघकान्।।[7]
कुत्रापि हस्तान् विततांश्च पादान, शिरांसि गृधैः
परिलुण्ठितानि।
गोमायुभिर्भक्षितमांसकानि, ददर्श चाङ्गानि शमी महात्मा।।[8]

उपर्युक्त पद्यों में मृत मनुष्य, पशु तथा पक्षी आलम्बन विभाव हैं। गिद्धों तथा शृगालों द्वारा मृतकों के हाथों, पैरों एवं मस्तकों को नोचना तथा तात्कालिक वातावरण उद्दीपन विभाव हैं। लोगों द्वारा नेत्र संकोचन करना आदि अनुभाव हैं। उद्वेग, विषाद, व्याधि आदि व्यभिचारी भाव हैं। यहाँ विभाव, अनुभाव एवं सञ्चारी भावों के संयोग से वासना रूप में सामाजिकों के हृदय में स्थित 'जुगुप्सा' नामक स्थायीभाव आस्वादित होता हुआ 'वीभत्स' रस के रूप में परिणत हो रहा है।

किसी की कथानक का विस्तार किन्हीं विशिष्ट पात्रों के जीवनवृत्त अथवा घटना विशेष से सम्बद्ध होता है। कवि अपने मन्तव्यों, विचारों एवं भावनाओं का प्रकटीकरण इन्हीं पात्रों के माध्यम से करता है। महाकाव्य का प्रधान पात्र वह होता है जिसके सम्पूर्ण जीवन से घटना विशेषों का प्रकाशन किया जाता है। उससे सम्बन्धित अन्य पात्र सहायक चरित्र की भूमिका का निर्वाह करते हैं। वस्तुतः चरित्र–चित्रण महाकाव्य की चारुता का प्राण और स्थायी तत्त्व माना जाता है। महाकाव्य में चरित्र–चित्रण द्वारा कवि अपनी आन्तरिक अनुभूतियों एवं जीवन के शाश्वत मूल्यों की अभिव्यक्ति करता है। वीररस

प्रधान 'श्रीगान्धिगौरवम्' ऐतिहासिक महाकाव्य के सभी पात्र लोकप्रसिद्ध हैं। देश की स्वतन्त्रता तथा अहिंसक शान्तिपूर्ण संघर्ष के लिए विश्वभर में वन्दनीय रहे 'महात्मागाँधी' उपर्युक्त महाकाव्य के नायक हैं। भारतभूमि के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले क्रान्तिवीर महात्मा गाँधी के चरित्र को प्रस्तुत करने से महाकाव्यकार की लेखनी धन्य हो गई है।

भारतीयों के प्रेरणास्रोत रहे महात्मा गाँधी का चरित्र महाकाव्य में स्वर्ण की भाँति निखर उठा है। महात्मा गाँधी में धीरोदात्त नायक के समस्त लक्षण उक्त कृति में पूर्णरूपेण घटित हो रहे हैं। गाँधीजी अपनी मातृभाषा गुजराती के अतिरिक्त हिन्दी, संस्कृत, फ्रेंच, लैटिन, उर्दू आदि विभिन्न भाषाओं के भी ज्ञाता थे –

सम्प्राप्य नन्दनमासौ बुधसत्यनिष्ठो,
'मैट्रीकुलेशन'–परीक्षणमुत्ततार।
भाषाञ्च 'लैटिन' महो शुभदान्यभाषा, अभ्यस्य तन्नयनदीं सुखमुत्पपार।।[9]
श्रीनन्दने गान्धिमहोदयेन, गीतार्थ आर्नल्ड–कृतस्त्वपाठि।
तेनैव चानूदितबु(काव्यं, प्राभवितोऽभूत्समधीत्य सम्यक्।।[10]

विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता रहते उन्होंने 'बैरिस्टर' प्रमाण–पत्र प्राप्त कर वकालत से विभिन्न देशों में अपना कीर्तिमान स्थापित किया, वहीं सत्य, अहिंसा एवं सदाचरण के अनुगामी गाँधी ने अपने इन्हीं तीन शास्त्रों के बल पर ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था। इन्होंने विद्याध्ययन के समय लन्दन में रहते हुए एक वृद्धा द्वारा आमन्त्रित होने पर अपने विवाह विषयक वृत्तान्त पत्र में सूचित कर अपने सत्यवक्ता होने का प्रमाण प्रस्तुत किया था। साथ ही चुंगी न देने वाले अपने मित्र रुस्तम द्वारा चुंगी अधिकारी को अधिक धन दिलाकर सत्यवादी होने का परिचय भी प्रस्तुत किया था–

वाचिस्तरोऽयं न मृषा जगाद, सत्याभियोगो विहितः सदैव।
तस्यास्ति मित्रं स तु 'रुस्तमो' यो, न्यूनं करं वै ददते विदित्वा।।[11]
कराधिकारिणे तस्मै द्विगुणं दापयान् करम्।
तद्दोषं क्षमयामास सत्यवादी सदा सुखी।।[12]

गाँधीजी मन, वाणी और कर्म से किसी को कष्ट नहीं पहुँचाते थे। वे मन से भी किसी का अहित नहीं सोचते थे। हरपल अहिंसा व्रत का पालन करते थे तथा सत्य एवं अहिंसा रूपी अस्त्र से अंग्रेजों से युद्ध करके भारत को अंग्रेजों की परतन्त्रता से मुक्ति दिलवाई। दुःख–सागर में गिराए हुए भारतीयों का सत्याग्रह के द्वारा उद्धार कर अपने यश से दिशाएँ श्वेत कर दी थी–

सत्याग्रहेण मान्योऽयं दुःखवारिधिपातितान्।
भारतीयान् समुद्धृत्य यशसाऽश्वेत यद् दिशः।।[13]

सत्याग्रह को हाथ में लेकर अपने साथियों के सहित युद्ध में अफ्रीकी शासक के प्रबल वीरों को जीत लिया था–

सत्याग्रहोऽयं ह्यबलास्त्रमुख्यं हस्ते गृहीत्वा सह सार्थिभिः स्वैः।
गान्धी विजिग्ये समराङ्गणे तान्, अफ्रीकिराजः प्रबलांश्च वीरान्।।[14]

हिंसा से द्वेष रखने वाले तथा सत्य को नारायण मानने वाले गाँधीजी ने किसी से कभी राग–द्वेष तक नहीं किया–

सत्यं दृष्टं गान्धिना यत्र यादृक्, तादृक् तत् संवर्णितं तेन सम्यक्।
हिंसा–द्वेषी सत्यनारायणीयो, रागद्वेषौ नैव चक्रे स गान्धी।।[15]

गाँधीजी ने गीता के वचनों द्वारा शान्ति, समता एवं सत्य की लोगों को शिक्षा दी। वैदिक मंत्रों, पञ्चगव्य तथा गंगाजल से सभी को पवित्र करते हुए उनके मन को भी शुद्ध किया था।

यैः स्वीकृतो यावनसम्प्रदाय–स्ते भीरवस्तन्मत एव भीरुः।
एवं स गीतावचनैश्च शाम्य, मशिक्षयत्साम्यमथो सुसत्यम्।।[16]
वेदोक्तमन्त्रैरथ पञ्चगव्यैः गङ्गाजलैः पावितवांश्च सर्वान्।
शुद्धानि कृत्वा च तयोर्मनांसि भ्राम्यन् गतो दग्धगृहान् विलोकितुम्।।[17]

इसके अतिरिक्त गाँधीजी सदा स्वावलम्बी रहे। वे अपने घर तथा शौचालय की सफाई स्वयं करते थे। अपने हाथों से पिसे हुए आटे तथा हरी सब्जियों को खाते थे–

आनीय चक्रीं नरयुग्मचाल्यां, हस्तैः सुपिष्टन्तु पिषाणभोज्यम्।
शौचालये स्वे भवने च सर्वदा, स्वयं तथा स्वैः शिशुभिः सहैव तैः।।[18]

वहीं गौण पात्रों में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, श्रीगोपालकृष्ण गोखले, पण्डित मदनमोहन मालवीय, श्रीमोतीलाल नेहरू, ए.ओ. ह्यूम, श्री विट्ठल भाई, मोहम्मद अली, कस्तूरबा, राजकुमारी, अमृतकौर, नाथूराम गोडसे, सरोजिनी नायडू, उत्तमचन्द, पुतली बाई, इर्विन प्रभृति पात्रों को महाकाव्य में स्थान दिया गया है। वीररस प्रधान मौलिक एवं ऐतिहासिक महाकाव्य होने के कारण सभी पात्र लोकप्रसिद्ध हैं। कविवर ने पात्रों के चरित्र–चित्रण में अपने अनुपम कौशल का परिचय दिया है। पात्रों के माध्यम से कवि वर्तमान राष्ट्रीय चेतना को उद्भासित करने में अनुपम हैं तथा कविवर का राष्ट्रीय प्रेम ही पात्रों के सृजन में मूर्तरूप हुआ है।

महाकाव्य में चारुता एवं रोचकता के संवर्धन के लिए 'विविध वर्णन' का संयोजन भी किया जाता है। यह विविधतापूर्ण वर्णन जहाँ कथानक के प्रवाह में सहायक होता है, वहीं सहृदय से चित्त को विभिन्न घटनाओं, स्थानों, वृत्तान्तों तथा प्रकृति के बहुरंगी शोभन चित्रण द्वारा आह्लाद से आप्यायित कर जाता है। विविध वर्णन महाकाव्य का संवेदनशील तत्त्व होता है तथा कवि की कवित्व शक्ति का द्योतक होता है। कविवर त्रिपाठी नेमहाकाव्य के शास्त्रीय नियमों का सजगता के साथ निर्वाह करते हुए अपने प्रबन्ध को इसी प्रकार रमणीय वर्णनों से सुसज्जित किया है। कृतिकार ने अपने प्राकृतिक उपादनों का अपनी सरस और कलात्मक प्रतिभा क बीच मञ्जुल सामञ्जस्य स्थापित करते हुए इस महाकाव्य में अनेकविध स्थानों पर रमणीय भाव–चित्रण प्रस्तुत किये हैं। कविवर ने द्वितीय सर्ग में लन्दन की उपमा नन्दन वन से की है। गाँधीजी नन्दन–वन के समान लन्दन को छोड़कर स्वदेश भारत को उसी प्रकार वापिस लौटते हैं, जिस प्रकार कोई पक्षी विशाल अन्तरिक्ष में भ्रमण करने के पश्चात् अपने विश्राम स्थल का आश्रय लेता है।

श्रीनन्दनं भूमिगनन्दनं स, विहाय मुम्बां पुनराजगाम।

भ्राम्यन् खगोऽनन्तमुपैति नीडं, तथा
विदेशान्निजदेशमायात्।।[19]

श्री त्रिपाठी ने प्रस्तुत महाकाव्य में भारत की नदियों का उल्लेख भी किया है। षष्ठ सर्ग के आठवें पद्य में साबरमती नदी का, वहीं 29वें पद्य में नर्मदा नदी का, वहीं 33वें पद्य में तापी नदी का, आठवें सर्ग में 53वें पद्य में यमुना नदी का चित्रण किया है। द्वितीय सर्ग के 74वें पद्य में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम का वर्णन इस प्रकार है –

दृष्टा गङ्गा श्वेतवर्णा वहन्ती, कालिन्दी च श्यामवर्णा
मिलन्ती।
अन्तारूपा शारदैषा तृतीया, जातास्त्वेयं सङ्गमोऽयं
त्रिवेण्याः।।[20]

इस प्रकार तृतीय सर्ग के प्रारम्भ में कलकत्ता से नेपाल के लिए प्रस्थान करते समय की गई समुद्री यात्रा का वर्णन इस प्रकार है –

प्रबलबलसमेतो मातरिश्वा चचाल, जलकलकलशब्दा वारिधौ
सम्बभूवुः।
वहनगतमनुष्यान् कम्पयामास चेत्थ, क्षिपति पवनमूर्तिः
प्रेतभूतो ह्यरातिः।[21]
हिलति पवनवेगात् स्तीमरस्तत्र मन्ये, ज्वरविषमनिमग्नः
कम्पते कोऽपि जीवः।
विहिलनगत एकश्चान्यदेहे पपात, पिहितवदननार्य्यः
स्पष्टरूपा बभूवुः।।[22]

कविवर ने 30 जनवरी, 1948 की सायंकालीन सन्ध्या का वर्णन आठवें सर्ग के 49वें पद्य में किया है, जिसमें संध्याकालीन प्रार्थनादि कर्म करने की इच्छा से महात्मा गाँधी अपनी पौत्री मनु के दाहिने कन्धे पर दाहिना हाथ और पौत्रवधू आभा के कन्धे पर बायाँ हाथ रखकर सभा को जा रहे थे। ऐसे अवसर पर हिंसक व्याध रूप नाथूराम गोड़से द्वारा गाँधीजी की छाती में तीन गोलियाँ दागी जाती हैं। उस समय सन्ध्या समय जनवरी मास की पुण्य इकतीसवीं तिथि महात्मा गाँधी की भस्म लपेटकर योगिनी के समान शोभित हुई।

जनवर्य्या एकत्रिंशतिथिः पुण्या महात्मनः।
सायं भस्म समालिप्य योगिनीवद् रराजः सा।।[23]

इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु का उल्लेख प्रथम सर्ग के पचासवें सर्ग में, श्रावण मास का चतुर्थ सर्ग के 77वें पद्य में, भाद्रपद माह का प्रथम सर्ग के 12वें पद्य में किया है। कविवर ने लन्दन, जोहान्सबर्ग, पोरबन्दर, राजकोट, मद्रास, आगरा, लखनऊ, नोआखाली, बीजापुर, शान्ति निकेतन, फीनिक्स, वर्धा, लाहौर, जञजीवार, नेटाल, ट्रांसवाल आदि नगरों के वर्णन भी महाकाव्यों में यत्र–तत्र किये हैं। चतुर्थ सर्ग में हरिद्वार के कुम्भ मेले का उल्लेख भी कवि त्रिपाठी जी ने किया है जहाँ गंगा माता सभी को पवित्र करती हुई अपने सेवक आर ईश्वर के विशिष्ट पुरुष पण्डों को स्वर्ण राशि दिला रही थी तथा लक्ष्मण झूला झूले ही हिलावट द्वारा आन्दोलनकारियों को स्वतन्त्रता आन्दोलन हेतु मानो प्रेरित कर रहा था।

उच्चात् स्रवन्ती जननी तु गङ्गा, सर्वान् पुनाना
निजसेवकेभ्यः।
पण्डाभ्य ईशस्य विशेषमुभ्यः, प्रदापयत्सा
कलधौतराशीन्।।[24]

ततो महात्मा परिवारयुक्तः पदभ्यां गतो लक्ष्मणदोलिकायाम्।
आन्दोलनं किं तत एव नीत्वा, प्रचारयामास जनेषु
गान्धी।।[25]

प्रस्तुत कृति के पञचम सर्ग में कविवर ने गाँधी जी द्वारा देश को स्वतन्त्रता दिलवाने के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध छोड़े गये सत्याग्रह आन्दोलन को युद्ध रूप में प्रस्तुत किया है। इस युद्ध में सत्याग्रह को निर्बलों एवं निःशस्त्रों का मुख्य शस्त्र माना गया है। इसी शस्त्र से गाँधीजी ने अफ्रीका के बलवान प्रशासकों पर विजय प्राप्त की थी। इसके लिए गाँधीजी ने काठियावाड़ में पच्चीस चेलों सहित सत्याग्रहाश्रम स्थापित किया तथा अस्पृश्यता को हटाने का कार्य किया।

सत्याग्रहाश्रमं नाम्ना 'काठियावाड़' देशगम्।
गाँधी संस्थापयामास पञचविंशतिचेलकैः।।[26]

इसीप्रकार कवि प्रकृति के सच्चे पुजारी हैं तथा इन्होंने प्रकृति के प्रसिद्ध उपादानों का रमणीय वर्णन किया है। प्रकृति के उपादानों में मानवीय सघन अनुभूतियों को मिलाने में कवि को पर्याप्त सफलता मिली है। यद्यपि यह सत्य है कि वीररस प्रधान महाकाव्य होने के कारण प्राकृतिक प्रसंग कम ही आये हैं, परन्तु जहाँ कवि को अवसर मिला है वहाँ प्रकृति अपने स्वाभाविक विलास को लेकर प्रतिस्पन्दित हो उठी है।

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी का 'श्रीगान्धिगौरवम्' महाकाव्य में भाषा पर असाधारण अधिकार लक्षित होता है। कवि छन्दों और अलंकारों के चातुर्यपूर्ण निबन्धन में जैसे सिद्धहस्त हैं, उसी प्रकार विषय और वर्णनारूप भाषा के गठन में भी निपुण हैं। साधारणतया इनकी भाषा प्रसाद गण ओर वैदर्भी रीति प्रधान है। भाषा नितान्त प्रौढ़ और परिष्कृत है। काव्य में प्रकृति–चित्रण, विविध, वर्णन, गुण–रीति, अलंकार, छन्दादि वर्णन सर्वत्र सुन्दर रीति से सन्निविष्ट हुए हैं। कवि का शब्दचयन एवं भावपूर्ण शब्द–विन्यास से अद्भुत कौशल प्रकट हुआ है। शब्द काशल केवल चमत्कार विधायक ही नहीं, अपितु भावों की व्यञजना करने वाला तथा रसोद्रेक में पूर्ण सार्थक सिद्ध हुआ है। महाकाव्य में पदे–पदे सरसता एवं गुणात्त्वाधान दर्शनीय है। कविवर द्वारा प्रस्तुत भाषा महाकाव्य की कथावस्तु में कहीं अवरोध उत्पन्न करने वाली नहीं है।

कवि को रसाभिव्यक्ति में अत्यधिक सहायक अनुप्रास अलंकार सर्वाधिक प्रिय है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

पुनः कारा पुनर्मुक्ति पुनस्सेवा पुना रणः।
अनेन क्रमलाभेन तपोवृद्धिञचकार सः।।[27]

इसीप्रकार निम्न उदाहरण में कवि द्वारा प्रस्तुत अलंकार का उदाहरण द्रष्टव्य है –

लक्षाधिक कर्मणि दत्तचित्तः, आसीत्सदा लोष्ठसमानवित्तः।
स आत्मबोधे नितरां वरिष्ठः, श्रीराजचन्द्रः कवितागरिष्ठः।।[28]

रूपक अलंकार के कतिपय उदाहरण निम्न हैं–

सम्प्राप्य नन्दनमसौ बुधसत्यनिष्ठो,
'मैट्रीकुलेशन' परीक्षणमुत्ततार।
भाषाञच 'लैटिन' महो शुभदान्यभाषा,
अभ्यस्य तन्नयनदीं सखमुत्पपार।।[29]

यहाँ 'नयनदीं' पद में रूपक अलंकार है। यहाँ कानून उपमेय तथा नदी उपमान हैं

सत्याग्रहेण मान्योऽयं दुःखवारिधिपातितान्।
भारतीयान् समुद्धृत्य यशसाऽश्वेतयद् दिशः।।[30]

यहाँ 'दुःखवारिधि' पद में रूपक अलंकार है। यहाँ दुःख उपमेय तथा वारिधि उपमान है।

इसी क्रम में 'अर्थान्तरन्यास' अलंकार के कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

शतावधानीयचयं जिघृक्षुणा, श्रीगान्धिना शब्दमयं स्वभाण्डकम्।
रिक्तीकृतं पूरितवान् स उत्तरै, र्मैधाविभिर्विश्वमिदं न रिच्यते।।[31]

कराधिकारिणे तस्मै द्विगुणं दापयन् करम्।
तद्दोषं क्षमयामास सत्यवादी सदा सुखी।।[32]

वने वसन्तो मुनयः फलाशिनो, भवन्ति नूनं बहुतथ्यमेतत्।
अयं महात्मा रसहायनेषु, फलानि पक्वानि गृहेष्वखादीत्।।[33]

'श्रीगान्धिगौरवम्' महाकाव्य में छन्दोविधान भी मनापहारण करने में सक्षम है। कविवर ने आठ सर्गीय महाकाव्य में कुल 21 छन्दों का आकर्षक पयोग किया है। महाकाव्य में छन्दों का प्रयोग भावों की सम्प्रेषणीयता को तीव्र बना देने के अनुरूप ही है। कवि का सर्वाधिक प्रिय छन्द 'अनुष्टुप्' रहा है। इसके अतिरिक्त महाकाव्य में इन्द्रवज्रा, उपजाति, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, भुजंगप्रयात, मन्दाक्रान्ता, मालिनी, वंशस्थ, वसन्ततिलका प्रभृति छन्दों का भी प्रयोग किया गया है। इस प्रकार कवि द्वारा प्रस्तुत कलापक्ष के सभी तत्त्व काव्य को सौन्दर्यशाली बनाने में अतीव सहायक सिद्ध हुए हैं। कवि ने सरस भाषा एवं प्रसाद गुण का प्रयोग कर काव्य को जो सरसता एवं बोधगम्यता प्रदान की है, वह प्रशंसनीय है।

निष्कर्ष

कविवर त्रिपाठी ने महाकाव्य में समता की भावना को सुविकसित करने और विषमता की भावना का विनाश करने का सन्देश दिया है। महाकाव्य के माध्यम से कविवर सन्देश देना चाहते हैं कि 'सादा जीवन उच्च विचार' का अक्षरशः पालन करते हुए आडम्बरों का परित्याग करना चाहिये एवं व्यक्ति को स्वावलम्बी होना चाहिये। सत्य का सेवन करने वाला व्यक्ति हिंसा से सदैव विद्रोह करता है। कवि ने महात्मा गाँधी के जीवन चरित के माध्यम से जन–जन के मन में राष्ट्रीय भावना जागृत करने का प्रयास किया है। काव्य में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, सेवा–परायणता, आत्म–समर्पण आदि गुणों को अपनाने का संदेश दिया गया है। साथ ही स्वतन्त्रता, सामाजिकता, क्रान्ति, समता, एकता, राष्ट्रीय चेतना, सर्वधर्म सहभाव और नैतिक आचरण आदि से सम्बद्ध मौलिक विचार प्रस्तुत किये हैं। चरित्त प्रधान महाकाव्य होते हुए भी यह ज्ञान–विज्ञान से ओत–प्रोत एवं प्रेरणास्पद कृति है। कविवर ने उक्त प्रबन्ध में भारत की पावन धरती, नदियों, तीर्थों आदि की महत्ता पर प्रकाश डालकर स्वदेश प्रेम की भावना जगाई है तथा स्वाधीनता प्राप्ति हेतु स्वार्थत्याग, एकता तथा स्वाभिमान को परमावश्यक बताते हुए भोग–विलासों को देशहितार्थ तिलाञ्जलि देने का भी पाठकों को सन्देश दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **3/33**
2. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **3/34**
3. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **3/35**
4. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **7/47**
5. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **7/49**
6. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **7/53**
7. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **8/12**
8. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **8/13**
9. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **1/44**
10. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/1**
11. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/64**
12. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/66**
13. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **4/71**
14. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **4/59**
15. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **8/72**
16. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **8/10**
17. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **8/11**
18. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **4/46**
19. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/3**
20. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/74**
21. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **3/1**
22. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **3/2**
23. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **8/61**
24. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **4/101**
25. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **4/102**
26. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **5/6**
27. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **7/28**
28. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/08**
29. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **1/44**
30. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **4/71**
31. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/11**
32. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **2/66**
33. 'श्रीगान्धिगौरवम्' **3/30**
34. आधुनिक संस्कृत महाकाव्य परम्परा– डॉ. केशवराव मुसलगावकर।
35. महान् व्यक्तित्व – डॉ. लाल एवं जैन
36. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी।
37. संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन– डॉ. रहसबिहारी द्विवेदी।
38. स्वतन्त्रता सेनानी कोश – विश्वप्रकाश गुप्त।
39. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना – डॉ. हरिनारायण दीक्षित।
40. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. हीरालाल शुक्ल।